मिशन शिक्षण संवाद
बेसिक की कविताओं का संगीतमय संग्रह
स्वरांजलि
5
शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान

पाठ-1

विमल इन्दु की विशाल किरणें

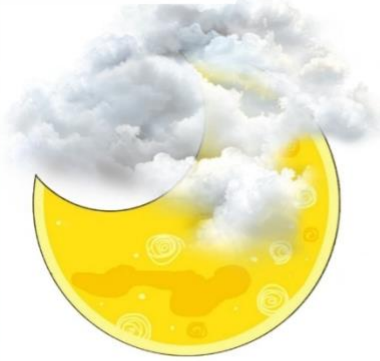

विमल इन्दु की विशाल किरणें
प्रकाश तेरा बता रही हैं
अनादि तेरी अन्नत माया
जगत् को लीला दिखा रही हैं

प्रसार तेरी दया का कितना
ये देखना हो तो देखे सागर
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे
तरंगमालाएँ गा रही हैं

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना
वो देख सकता है चंद्रिका को
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ
निनाद करती ही जा रही हैं

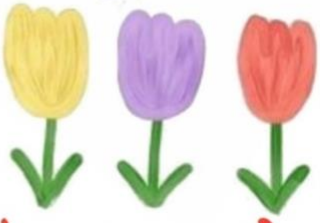

जो तेरी होवे दया दयानिधि
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके
यही तो आशा दिला रही है

(श्री जय शंकर प्रसाद)

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ- 1

पथ मेरा आलोकित कर दो

पथ मेरा आलोकित कर दो।
नवल प्रात की नवल रश्मियों से मेरे उर का तम हर दो।।
मैं नन्हा सा पथिक विश्व के पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा सा विहग विश्व के नभ में उड़ना सीख रहा हूँ।
पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक मुझको ऐसे पग दो, पर दो।।
पाया जग से जितना अब तक और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी उससे कहीं अधिक दे जाऊँ।
धरती को ही स्वर्ग बनाने का मुझको मंगलमय वर दो।।

- श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

वीडियो देखने के लिए icon को click करें

पाठ-५

सरिता

यह लघु सरिता का बहता जल

कितना शीतल, कितना निर्मल
हिमगिरि के हिम से निकल निकल,
यह निर्मल दूध सा हिम का जल,
कर-कर निनाद कल-कल छल-छल,
तन का चंचल मन का विह्वल
यह लघु सरिता का बहता जल

ऊँचे शिखरों से उतर-उतर,
गिर-गिर, गिरि की चट्टानों पर,
कंकड़-कंकड़ पैदल चलकर,
दिन भर, रजनी भर, जीवन भर,
धोता वसुधा का अन्तस्तल
यह लघु सरिता का बहता जल

हिम के पत्थर वो पिघल पिघल,
बन गए धरा का वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकलच
पी-पी कर अंजलि भर मृदुजल,
नित जलकर भी कितना शीतल
यह लघु सरिता का बहता जल

कितना कोमल, कितना वत्सल,
रे जननी का वह अन्तस्तल,
जिसका यह शीतल करुणा जल,
बहता रहता युग-युग अविरल,
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल
यह लघु सरिता का बहता जल

(श्री गोपालसिंह "नेपाली")

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ- 6

प्रकृति की सीख

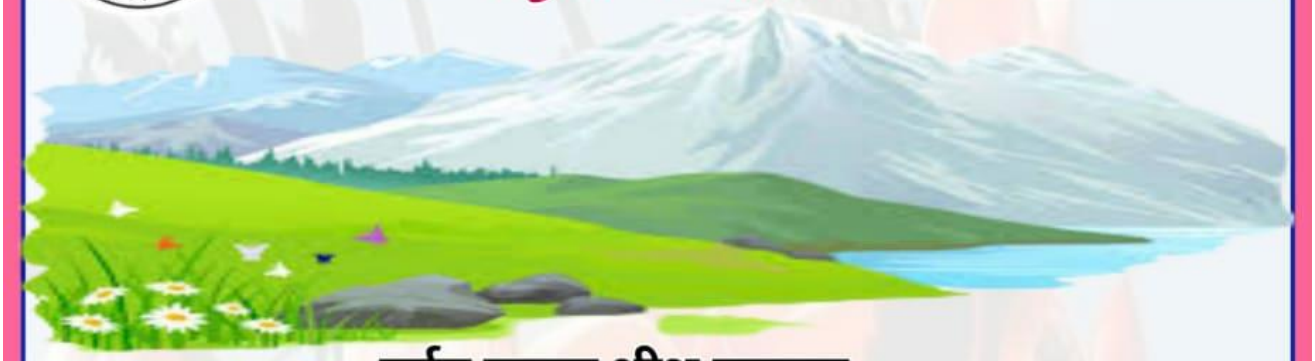

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

- सोहनलाल द्विवेदी

वीडियो देखने के लिए icon पर click कीजिए

पाठ- 10
चेतक की वीरता

रण बीच चौकड़ी भर-भर कर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।।

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान का घोड़ा था।।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौडा करवालों में।।

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ठहर गया।
विकराल वज्रमय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।।

भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।।

- श्री श्याम नारायण पाण्डेय

वीडियो देखने के लिए icon को click करें

कोई ला के मुझे दे

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्टे-मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल-
कोई ला के मुझे दे!

एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी-
कोई ला के मुझे दे!

एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात-
कोई ला के मुझे दे!

एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब-
कोई ला के मुझे दे!

दामोदर अग्रवाल

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ-14
भक्ति-नीति माधुरी
(रसखान)

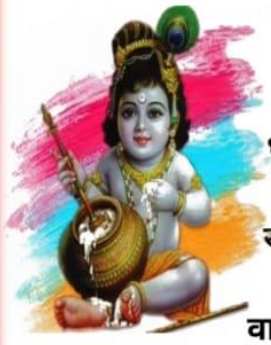

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।

खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।।

वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।

काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर के तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौं निधि के सुख, नन्द की गाय चराय बिसारौं।।

नैनन ते रसखान जबै ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ये कलधौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारौं।।

रसखान का जन्म सन् 1533 ई. जिला हरदोई में हुआ था । रसखान कृष्ण भक्त थे इन्होंने अपनी कृतियों में कृष्ण के विविध रूपों का सुंदर वर्णन किया हैं। इनकी रचनाओं में सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, रसखान शतक प्रमुख हैं। इनकी मृत्यु सन् 1618 में हुई थी।

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ-14
भक्ति-नीति माधुरी
(तुलसीदास)

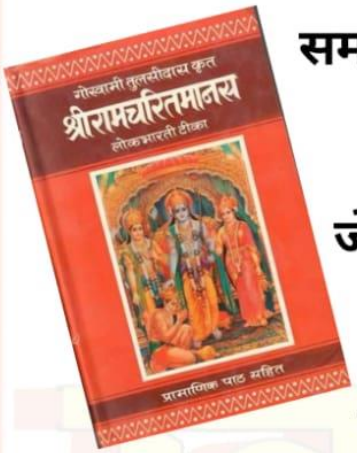

का वरषा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने ।।1।।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।।2।।

कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा।।3।।

हित अनहित पसु पच्छिउ जाना।
मानुष तनु गुन ग्यान- निधाना ।।4।।

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना ।।5।।

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।6।।

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 बांदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। रामचरितमानस' जानकी मंगल, बिनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी आदि इनकी अन्य प्रमुख रचनाओं में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का अद्भुत समन्वय हुआ है। इनकी मृत्यु सन् 1632 में हुई थी।

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ-14

भक्ति-नीति माधुरी

(मीराबाई)

बसौ मोरे नैनन में नन्दलाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुन तिलक दिये भाल।

मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बने बिसाल।

अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर वैजन्ती माल।।

छुद घण्टिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।

मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेवाड़ के पास 'चोकड़ी' गाँव में हुआ था। ये बचपन से ही कृष्ण भक्त थीं। इनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति प्रेमभाव का वर्णन है।

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

पाठ- 17

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।

यह समाधि यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अन्तिम लीला स्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह,
भग्न विजय माला-सी।
उसके फूल यहीं संचित हैं,
है यह स्मृति शाला-सी।।

सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।

पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती,
है वीरों की बानी।।

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।

- सुभद्रा कुमारी चौहान

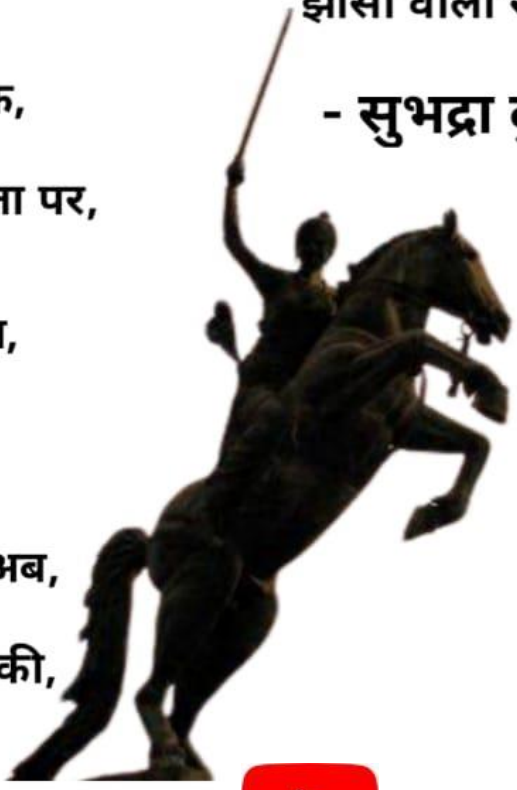

वीडियो देखने के लिए icon को click करें

हम हैं किससे कम

नयी राह पर चलने वाले
खुली हवा में पलने वाले
अच्छे बच्चे हम। हम है किससे कम।
बोला, हम है किससे कम।।
पाँव नहीं, लेकिन
अपने पैरों पर खड़े हुए
हर मुश्किल आसान बनाकर
इतने बड़े हुए
आगे बढ़े कदम। हम है किससे कम।
बोला, हम है किससे कम।।
हाथ नहीं पर हम लिख सकते
एक नई गाथा
जिसके आगे बड़े-बड़ों का
झुक जाए माथा।
बाँहों में वह दम। हम हैं किससे कम।
बोलो हम है किसमे कम।।
हमे कुरूप समझने वालों
क्या यह नहीं पता
मन की सुंदरता होती है।
सच्ची सुंदरता
तोड़े सभी भरम। हम हैं किससे कम।
बोलो, हम है किससे कम।।

- सूर्य कुमार पांडे

वीडियो देखने के लिए icon पर click करे

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा ।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।

स्वर्गीय कवि रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा "जन गण मन" के नाम से प्रख्यात शब्दों और संगीत की रचना भारत का राष्ट्र गान है।

वीडियो को देखने के लिए icon को click करें

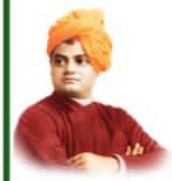

मिशन शिक्षण संवाद
मिशन शिक्षण संवाद
उमा पराशर, मथुरा ■ रुचि त्रिवेदी, कानपुर ◆ रविकांत तिवारी, झाँसी ■ प्रीति श्रीवास्तव, जौनपुर
छवि, वाराणसी
पूजा सचान, झाँसी ◆ विनोद कुमार पांडेय, जौनपुर ◆ गीता यादव, फतेहपुर
शिवम सिंह, जौनपुर
मिशन शिक्षण संवाद
मिशन शिक्षण संवाद
स्वरांजलि
वीरेन्द्र परनामी हमीरपुर
ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा ■ प्रतिभा यादव, सहारनपुर ◆ अर्चना पाण्डेय, गौतमबुद्ध नगर
अर्पण कुमार आर्य, बरेली ■ चांदनी द्विवेदी, चित्रकूट ◆ आर. के. शर्मा, चित्रकूट ■
टीम स्वरांजलि